RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-04
April -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

किन्नरों की मानसिक व सामाजिक पीड़ा व अस्तित्व का संघर्ष (पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा के संदर्भ में)

सविता रानी

प्रवक्ता हिन्दी विभाग माता हरकी देवी महिला महाविद्यालय, औढां सिरसा (हरियाणा)

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 15 April 2019

Keywords
अस्मिता, संस्कृति, पितृसत्तात्मक, किन्नर समाज, संवेदना

***Corresponding Author**
Email: savita2015b[at]gmail.com

ABSTRACT

विश्व के सभी समाजों में किन्नरों का भी एक वर्ग है जिसे थर्ड जेंडर, हिजड़ा, खुसरा, उभयलिंगी आदि नामों से संबोधित किया जाता है। आज हम 21वीं सदी में जी रहे हैं और अपने आप को बहुत आधुनिक मानते हैं लेकिन मन व मस्तिष्क आज भी दकियानूसी विचारों की संकीर्णता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ है। सभ्य कहलाने वाला समाज आज भी इन लोगों के अधिकारों और अस्तित्व को अनदेखा कर रहा है। माँ–बाप के साथ ही साथ समाज भी उन्हें नकार रहा है। सामाजिक व्यवस्था के कारण वे अन्दर से टूट रहे हैं। चित्रा मुद्गल का सम्पूर्ण साहित्य मानवीय संवेदनाओं से ओत–प्रोत दिखाई देता है और पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा भी मानवीय और सामाजिक मूल्यों से अछूता नहीं है। याद रहे कि जब हम किसी से प्रकृति प्रदत्त लिंग के आधार पर भेदभाव करते हैं तो निश्चय ही हम उनके मानवाधिकारों का हनन कर रहे होते हैं।

उद्देश्यः

मेरे इस शोध का उद्देश्य हाशिए पर जीवन यापन कर रहे किन्नर वर्ग को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास करना है। प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से इस वंचित तबके की जीवन की समस्या उसकी पीड़ा व संघर्ष को यथार्थ रूप से समाज के समक्ष प्रस्तुत करना है।

अर्नेस्ट ए. बेकर ने उपन्यास की परिभाषा देते हुए उसे गद्यबद्ध कथानक के माध्यम द्वारा जीवन तथा समाज की व्याख्या का सर्वोत्तम साधन बताया है। साधारण बोलचाल की भाषा द्वारा लेखक के लिए अपने पात्रों, उनकी समस्याओं तथा उनके जीवन की व्यापक पृष्ठभूमि से प्रत्यक्ष संबंध स्थापित करना आसान हो गया है। आधुनिक उपन्यासकार जीवन की विशृंखलताओं का नग्न चित्रण प्रस्तुत करने में ही अपनी कला की सार्थकता देखता है। वस्तुतः आधुनिक उपन्यास सामाजिक चेतना के क्रमिक विकास की कलात्मक अभिव्यक्ति है। जीवन का जितना व्यापक एवं सर्वांगीण चित्र उपन्यास में मिलता है उतना साहित्य के अन्य किसी भी रूप में उपलब्ध नहीं। सामाजिक जीवन की विशद व्याख्या प्रस्तुत करने के साथ ही साथ आधुनिक उपन्यास वैयक्तिक चरित्र के सूक्ष्म अध्ययन की भी सुविधा प्रदान करता है।

साहित्यिक दृष्टिकोण से आज अनेक विमर्शों की चर्चा की जा रही हैं। जैसे– स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श, आदिवासी विमर्श इत्यादि। किन्तु समाज बहिष्कृत, लिंग निरपेक्ष 'किन्नर' समुदाय के विषय में कोई बड़ी चर्चा दिखाई नहीं दे रही। ऐसा नहीं है कि साहित्य में किन्नर पर पहली बार कुछ लिखा गया हो, महाभारत महाकव्य में शिखण्डी एक ऐसा ही पात्र था, जो किन्नर था, अर्जुन ने अपने अज्ञातवास के एक साल का समय भी वृहन्नला किन्नर का रूप धारण करके व्यतीत किया था। कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में किन्नरों का उल्लेख किया है।

संसार में केवल दो लिंगों स्त्री और पुरूष को मान्यता मिली है। इन्हीं दो लिंगों को सृष्टि का आधार माना गया है। किन्तु समाज में एक और वर्ग उपस्थित है। वह है लैंगिक विकलांग। जिसे उभयलिंगी, तृतीयलिंग, हिजड़ा, खुसरा, किन्नर आदि नामों से संबोधित किया जाता है। इस वर्ग को हमेशा ही समाज द्वारा घृणित दृष्टि से देखा जाता है। वास्तव में यह समुदाय आज भी निरन्तर अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहा है।

समकालीन स्त्री लेखन में महिला साहित्यकारों ने स्त्री को केन्द्र में रखकर ही रचनात्मक साहित्य लिखा। लेकिन समकालीन महिला साहित्यकारों में चित्रा मुदगल एक ऐसा नाम है जिनका रचनात्मक साहित्य मानवीय और सामाजिक मूल्यों के प्रश्नों से भरा पड़ा हुआ है। चित्रा मुदगल ने समाज की मुख्यधारा से अलग थलग किन्नर वर्ग की दुःख, संवेदना को आत्मसात करते हुए 'पोस्ट बॉक्स नं0 203 नाला सोपारा' जैसे संवेदनात्मक उपन्यास की रचना की है।

यह उपन्यास किन्नरों के दैनिक यथार्थ, संवेदना, पीड़ा, दर्द से अवगत कराता पत्र शैली के माध्यम से नए कथ्य और शिल्प में रचित एक गंभीरता पूर्ण रचना है। भारत एक लोकतांत्रिक देश है। अनेकता में एकता इसकी पहचान है लेकिन यह लोकतंत्र को आत्मसात करने में समर्थ दिखाई नहीं दे रहा है। इसी कारण आज दलित, आदिवासी स्त्रियाँ, किन्नर

RRIJM 2015, All Rights Reserved

समुदाय, ब्राहमणवादी समाज व्यवस्था के लोगों की नजरों में समानता के अधिकारी नही हैं।

दलित, आदिवासी और स्त्री वर्ग का समाज में बहुत संघर्ष के बाद अपना कुछ अस्तित्व दिखाई देता है। लेकिन किन्नर समुदाय लंबे समय से हाथियेकरण की स्थिति में अभी भी अपनी अस्मिता के लिए संघर्षरत दिखाई दे रहा है। वे जो न पूर्ण स्त्री की श्रेणी में आते हैं न ही पूर्ण पुरूष की श्रेणी में आते हैं उन्हें किन्नर के नाम से जाना जाता है। किन्नरों का इतिहास बहुत पुराना है। ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार, हिंदू और मुसलमान शासकों द्वारा किन्नरों का इस्तेमाल खासतौर पर अंतःपुर और हरम में रानियों की पहरेदारी के लिए किया जाता था।

लेखिका उपन्यास के बारे में लिखते हुए कहती है कि, ''लंबे समय से मेरे मन में पीड़ा थी। एक छटपटाहट थी, कि आखिर क्यों हमारे इस अहम हिस्से को अलग–थलग किया जा रहा है। हमारे बच्चों को क्यों हमसे दूर किया जा रहा है। आजादी से लेकर अभी तक कई रूढ़िया टूटी। लेकिन किन्नरों की जिंदगी में कोई बदलाव नहीं आया। क्यों आखिर इनका दोष क्या है? यही सवाल मुझे बेचैन करता था।'' इस उपन्यास में किन्नर विनोद उर्फ बिन्नी के माध्यम से किन्नर समाज की उस पुरातन रूढ़िवादी सामाजिक व्यवस्था पर कुठाराघात किया है, जो एक मनुष्य को मनुष्य नहीं समझता। मानवीय मूल्यों के हनन वाली इसी व्यवस्था के चलते विनोद को सिर्फ चौदह वर्ष की आयु में स्कूली शिक्षा के दौरान किन्नर चंपाबाई के हवाले कर दिया जाता है और लोगों को कह दिया जाता है कि किसी दुर्घटना में वो मारा गया। दोहरे विस्थापना के इसी दर्द के कारण विनोद अपने घर का पता करके अपनी माँ को पत्र के माध्यम से अपनी व्यथा से अवगत कराता है। उपन्यास की शुरूआत इन्हीं पत्रों के माध्यम से होती है। विनोद उर्फ़ बिन्नी को अपनी प्राणों से प्रिय माँ के बीच संवाद के लिए चिट्ठियाँ क्यों? ये दूरियां समाज ने बनाई हैं, जिसे ना चाहते हुए भी बा और बिन्नी मानने को मजबूर हैं।

''खिड़की से सटा खड़ा अब मैं अपने कागज–कलम के पास लौट आया हूँ, लेकिन समझ नहीं पा रहा बा! सींखचों से दाखिल हो दिल्ली के मेघ मेरी आँखों में क्यों आ समाये है। जब बाहर भीतर एक साथ मेघ बरस रहे हों तो तुझे लिखी जाने वाली चिट्ठी शुरू कैसे हो सकती है?'' पक्तियाँ विनोद की मनः स्थिति का सटीक वर्णन करती है। विनोद जिस स्थिति में है वह अपने भावों को सिर्फ माँ के ही सामने स्पष्ट कर सकता है क्योंकि वह अपनी माँ से अत्यधिक प्रेम करता है।

उपन्यास एक गंभीर प्रश्न पाठकों के समक्ष उठाता है कि लिंग पूजक समाज लिंग विहीनों को कैसे स्वीकार करेगा? उपन्यास इस प्रश्न पर गंभीर चिंतन व्यक्त करता है कि आखिर एक मनुष्य को सिर्फ इसलिए समाज बहिष्कृत क्यों होना पड़े कि वह लिंग दोषी है? सिर्फ इस एक कमी के कारण उसकी उम्मीदों, सपनों, आकांक्षाओं, भावनाओं का गला क्यों घोट दिया जाता है? उपन्यास इस बात को प्रबलता से रेखांकित करता है कि हमारा समाज जब तक यौन केन्द्रित बना रहेगा, तब तक यह समस्या बनी रहेगी। यौन केन्द्रित समाज से मुक्ति ही इस उपन्यास का केन्द्रीय कथ्य है और उद्देश्य भी।

आजादी से पहले और बाद में समाज की कई रूढ़ियों और मान्यताओं में सुधार हुआ लेकिन किन्नरों के प्रति समाज का रवैया अभी भी उचित नहीं देखा जाता। विनोद शिक्षित है और वह अपनी पीड़ा और दर्द को पत्रों के माध्यम से व्यक्त करता है। लेकिन जो किन्नर अशिक्षित होते हैं, वह तो अपनी पीड़ा अपने हृदय में ही रखते होंगें। विनोद अपना परिवार छोड़कर हिजड़ों के बीच रहने को मजबूर हो जाता है, परन्तु अपने मूल्यों से किसी तरह से कोई समझौता नहीं करता। अपने जीवन के हर उतार–चढ़ाव की पल–पल की जानकारी माँ को चिट्ठियों के माध्यम से देता है। एक अधूरेपन और कशमकश में होने के बावजूद उसका संकल्प है कुछ बनने का, अपनी बिरादरी के लोगों को समाज में इज्जत दिलाने का। हाल ही में सुप्रीम कोर्ट ने किन्नरों के लिए आरक्षण दिए जाने की बात कही है लेकिन उपन्यास का नायक कहता है कि हमें आरक्षण की जरूरत नहीं है। मुझे लगता है कि इसके लिए माँ–बाप को ही कटघरे में लेने की जरूरत है। उन्हे यह समझाया जाए कि वे अपनी औलाद को कूड़े में न फेंकें। दूसरों को न सौंप दें। उनका सही तरीके से पालन–पोषण करे। सरकार को चाहिए कि वह किन्नरों के लिए आरक्षण के बजाय माँ–बाप को दंडित करने का प्रावधान करे। अगर भ्रूण के लिंग परीक्षण करने पर आप सजा का प्रावधान कर सकते हैं तो ऐसे माँ–बाप को क्यों दंडित नहीं किया जाना चाहिए जो अपने किन्नर बच्चों को नहीं छोड़ आते हैं?

उपन्यास इस तथ्य को भी सामने लाता है कि देश की मुख्यधारा की राजनीति की दिलचस्पी किस तरह से असल समस्या से अलग है। सियासतबाजों का लक्ष्य किन्नरों को मानवीय गरिमा दिलाने में नहीं, बल्कि आरक्षण का लालच देकर उन्हें वोट बैंक के रूप में सिर्फ उपयोग करने की है। प्रस्तुत उपन्यास में विनोद की जिंदगी बदलते–बदलते रह जाती है। जिन खुशनुमा दिनों की उसने चाह की थी, वह पूरी नहीं हो पाती। बिन्नी के साथ–साथ कहीं हम भी टूटते हैं और हमारी भी हार होती है। बिन्नी का साबुत बेटा बनने की चाहत समाज की न जाने कितनी विसंगतियों से परदा उठाती है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

निष्कर्षः

किन्नर वर्ग समाज का ही अंग है, लेकिन मुख्यधारा के समाज ने हमेशा ही उसका बहिष्कार किया, अपमानित किया और उसे कभी नही अपनाया। आज भी यह वर्ग हाशिये पर स्थित है जहाँ वह संघर्ष कर रहा है अपनी अस्मिता के लिए, अपने अधिकारों के लिए और सबसे अधिक अपने प्रति लोगों के नजरिये के लिए। चित्रा मुद्गल का यह चर्चित उपन्यास सिर्फ समाज के ऊपर सवाल ही नहीं उठाता बल्कि समस्याओं का हल प्रस्तुत करता है। किन्नरों के प्रति समाज के नजरिये को बदलने में इस उपन्यास की निश्चित ही उल्लेखनीय भूमिका है।

संदर्भः

1. पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा : चित्रा, मुद्गल, सामायिक प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. हिन्दी उपन्यास का इतिहास; राय गोपाल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. विचार परिक्रमा (थर्ड जेंडर विशेषांक), डॉ. शरद गोयल, दिल्ली।
4. जनकृति (थर्ड जेंडर विशेषांक), कुमार गौरव मिश्र, अमित मिश्र, वर्धा, त्रैमासिक अगस्त 2016।

RRIJM 2015, All Rights Reserved